Indian Journal of Modern Research and Reviews

This Journal is a member of the *'Committee on Publication Ethics'*

Online ISSN:2584-184X

Research Article

प्रवासी श्रमिक परिवारों में शिक्षा, स्वास्थ्य एवं लैंगिक भूमिकाओं पर श्रम प्रवास का प्रभाव: एक क्षेत्रीय अध्ययन (देवघर जिला, झारखण्ड के विशेष संदर्भ में)

मो. अली हसन [1*], डॉ. अशोक कुमार माजि [2]

[1] शोधार्थी, बिनोद विहारी महतो कोयलांचल विश्वविद्यालय, धनबाद, झारखंड, भारत

[2] शोध-निदेशक, सह-प्राध्यापक, स्नातकोत्तर अर्थशास्त्र विभाग

बिनोद बिहारी महतो कोयलांचल विश्वविधालय धनबाद, झारखंड, भारत

Corresponding Author: *मो. अली हसन

DOI: https://doi.org/10.5281/zenodo.18680703

सारांश

झारखण्ड के देवघर जिले के संदर्भ में श्रम प्रवास (labour migration) ग्रामीण जीवन का एक महत्वपूर्ण सामाजिक-आर्थिक आयाम बन चुका है। यह केवल रोजगार प्राप्त करने की प्रक्रिया नहीं है, बल्कि परिवारों की संरचना, जीवन-स्तर, सामाजिक संबंधों, लैंगिक भूमिकाओं तथा सांस्कृतिक व्यवहारों को प्रभावित करने वाली एक जटिल और बहुआयामी प्रक्रिया है। सीमित स्थानीय रोजगार अवसरों, कृषि आय की अनिश्चितता और बेहतर आय की तलाश के कारण देवघर जिले के अनेक ग्रामीण परिवारों के सदस्य देश के विभिन्न औद्योगिक और शहरी क्षेत्रों—जैसे दिल्ली, मुंबई, पंजाब, हरियाणा और अन्य राज्यों—में कार्य करने के लिए प्रवास करते हैं। इस प्रकार श्रम प्रवास स्थानीय अर्थव्यवस्था और पारिवारिक जीवन दोनों को प्रभावित करने वाला एक महत्वपूर्ण सामाजिक परिवर्तन का माध्यम बन गया है। देवघर जिला ऐतिहासिक, धार्मिक और आदिवासी दृष्टि से विशेष महत्व रखता है। यहाँ की बड़ी आबादी ग्रामीण क्षेत्रों में निवास करती है और आजीविका के लिए कृषि, असंगठित श्रम, छोटे व्यापार और सेवा कार्यों पर निर्भर है। रोजगार के सीमित अवसरों के कारण कई परिवारों के सदस्य मौसमी या दीर्घकालिक प्रवास को अपनाते हैं। इससे एक ओर परिवारों को बाहरी आय (remittances) प्राप्त होती है, तो दूसरी ओर पारिवारिक संरचना और दैनिक जीवन की जिम्मेदारियों में परिवर्तन आता है। प्रस्तुत शोध-पत्र का उद्देश्य देवघर जिले के प्रवासी श्रमिक परिवारों पर श्रम प्रवास के शिक्षा, स्वास्थ्य और लैंगिक भूमिकाओं पर पड़ने वाले प्रभावों का विश्लेषण करना है। अध्ययन के लिए जिले के विभिन्न ग्रामीण क्षेत्रों से 240 प्रवासी श्रमिक परिवारों का चयन किया गया और उनसे प्राथमिक आँकड़े प्रश्नावली तथा साक्षात्कार के माध्यम से एकत्र किए गए। इसके अतिरिक्त, जनगणना रिपोर्ट, सरकारी दस्तावेज़ों, और प्रवास से संबंधित पूर्व अध्ययनों जैसे द्वितीयक स्रोतों का भी उपयोग किया गया, जिससे विश्लेषण को व्यापक और विश्वसनीय बनाया जा सके। अध्ययन के निष्कर्ष यह दर्शाते हैं कि श्रम प्रवास का प्रभाव द्विआयामी (dual impact) है। एक ओर, प्रवास के माध्यम से प्राप्त आय परिवारों की आर्थिक स्थिति को बेहतर बनाती है, जिससे उपभोग स्तर, आवास सुधार, और स्वास्थ्य व्यय में वृद्धि देखने को मिलती है। कई परिवारों में रेमिटेंस के कारण बच्चों की बुनियादी आवश्यकताओं को पूरा करना आसान हुआ है। दूसरी ओर, प्रवास के कारण परिवार के प्रमुख सदस्य की अनुपस्थिति बच्चों की शिक्षा और पारिवारिक देखभाल पर नकारात्मक प्रभाव डाल सकती है। विशेष रूप से यह पाया गया कि बालिका शिक्षा पर अपेक्षाकृत अधिक प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है, क्योंकि घरेलू जिम्मेदारियाँ अक्सर लड़कियों पर आ जाती हैं।

लैंगिक भूमिकाओं के संदर्भ में अध्ययन से यह भी स्पष्ट हुआ कि पुरुष सदस्यों के प्रवास के बाद महिलाओं की पारिवारिक निर्णय-प्रक्रिया में भागीदारी बढ़ती है और वे आर्थिक तथा सामाजिक जिम्मेदारियों को अधिक सक्रिय रूप से निभाने लगती हैं। इससे महिलाओं के आत्मविश्वास और सामाजिक भूमिका में सकारात्मक परिवर्तन देखने को मिलता है। स्वास्थ्य के क्षेत्र में प्रवास से प्राप्त आय के कारण स्वास्थ्य व्यय में वृद्धि और चिकित्सा सेवाओं तक पहुँच में सुधार दिखाई देता है। फिर भी, लंबे समय तक परिवार से दूर रहने की स्थिति में मानसिक तनाव, अकेलापन और सामाजिक असुरक्षा जैसी मानसिक स्वास्थ्य समस्याएँ भी सामने आती हैं, जो प्रवासी श्रमिकों और उनके परिवारों दोनों को प्रभावित करती हैं। समग्र रूप से, यह अध्ययन दर्शाता है कि देवघर जिले में श्रम प्रवास केवल आर्थिक आवश्यकता का परिणाम नहीं है, बल्कि यह सामाजिक परिवर्तन की एक महत्वपूर्ण प्रक्रिया है, जिसके सकारात्मक और नकारात्मक दोनों प्रभाव परिवारों के जीवन के विभिन्न आयामों में दिखाई देते हैं। यह शोध ग्रामीण विकास नीतियों, शिक्षा और स्वास्थ्य कार्यक्रमों तथा महिला सशक्तिकरण योजनाओं के लिए उपयोगी दृष्टिकोण प्रदान करता है।

Manuscript Information

- **ISSN No:** 2584-184X
- **Received:** 02-01-2026
- **Accepted:** 26-01-2026
- **Published:** 18-02-2026
- **MRR:**4(2); 2026: 239-248
- **©2026, All Rights Reserved**
- **Plagiarism Checked:** Yes
- **Peer Review Process:** Yes

How to Cite this Article

मो. अली हसन, डॉ. अशोक कुमार माजि .प्रवासी श्रमिक परिवारों में शिक्षा, स्वास्थ्य एवं लैंगिक भूमिकाओं पर श्रम प्रवास का प्रभाव: एक क्षेत्रीय अध्ययन (देवघर जिला, झारखण्ड के विशेष संदर्भ में). इंडियन जर्नल ऑफ मॉडर्न रिसर्च रिव्यू. 2026;4(2):239-248.

Access this Article Online

www.multiarticlesjournal.com

© 2026 मो. अली हसन, डॉ. अशोक कुमार माजि. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

मुख्य शब्द: श्रम प्रवास, देवघर, शिक्षा, स्वास्थ्य, लैंगिक भूमिकाएँ, रेमिटेंस, आदिवासी समाज, झारखण्ड

1. प्रस्तावना

भारत जैसे विकासशील देश में श्रम प्रवास एक सामाजिक-आर्थिक यथार्थ है जो लाखों परिवारों के जीवन को प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से प्रभावित करता है। जनगणना 2011 के अनुसार भारत में लगभग 45.4 करोड़ प्रवासी हैं जिनमें से एक बड़ा हिस्सा अंतर्राज्यीय श्रम प्रवासी है। झारखण्ड राज्य, जो 2000 में बिहार से अलग होकर बना, अपनी समृद्ध खनिज संपदा के बावजूद गरीबी, बेरोजगारी और पिछड़ेपन से जूझ रहा है। यहाँ के ग्रामीण क्षेत्रों विशेषकर आदिवासी बहुल इलाकों से श्रम प्रवास की दर देश में सर्वाधिक में से एक है (Srivastava and Sasikumar, 2022)।

देवघर जिला झारखण्ड के संताल परगना प्रमंडल में स्थित है। यह जिला बाबा बैद्यनाथ धाम के कारण धार्मिक दृष्टि से महत्त्वपूर्ण है परंतु इसके ग्रामीण क्षेत्रों में जनजातीय जनसंख्या की बड़ी उपस्थिति है। जिले की आर्थिक स्थिति कृषि पर अत्यधिक निर्भर है जो मानसून की अनिश्चितता के कारण अस्थिर रहती है। भूमि का छोटा आकार, कृषि की निम्न उत्पादकता, और वैकल्पिक रोजगार का अभाव यहाँ के युवाओं को प्रवास के लिए विवश करता है। देवघर से प्रति वर्ष हजारों पुरुष और कुछ महिलाएँ बाहरी राज्यों में काम की तलाश में जाती हैं (Kumar and Patel, 2023)।

जब परिवार का कमाने वाला सदस्य घर छोड़कर जाता है तो पीछे रह जाने वाले परिवार पर इसका गहरा प्रभाव पड़ता है। बच्चों की पढ़ाई, स्वास्थ्य देखभाल और घर-परिवार का प्रबंधन — सब कुछ बदल जाता है। महिलाएँ जो पहले घर की चारदीवारी में सीमित थीं, अचानक खेती, बच्चों की परवरिश और आर्थिक निर्णयों का बोझ उठाने को मजबूर हो जाती हैं। यह परिवर्तन कहीं सशक्तीकरण की दिशा में जाता है तो कहीं अतिरिक्त बोझ बन जाता है (Deshingkar and Farrington, 2009)।

इस पृष्ठभूमि में प्रस्तुत शोध देवघर जिले में श्रम प्रवास के परिवारों पर पड़ने वाले बहुआयामी प्रभावों का अध्ययन करता है। शोध में मुख्यतः तीन क्षेत्रों पर ध्यान केंद्रित किया गया है — शिक्षा, स्वास्थ्य और लैंगिक भूमिकाएँ। इन तीनों क्षेत्रों में प्रवास के सकारात्मक और नकारात्मक दोनों प्रभावों का विश्लेषण किया गया है।

1.1 देवघर जिले का संक्षिप्त परिचय

देवघर जिला झारखण्ड राज्य के उत्तर-पूर्वी भाग में स्थित है और प्रशासनिक रूप से संताल परगना प्रमंडल का एक महत्वपूर्ण जिला माना जाता है। सामाजिक, सांस्कृतिक और धार्मिक दृष्टि से यह क्षेत्र विशिष्ट पहचान रखता है। जनगणना 2011 के अनुसार जिले की कुल जनसंख्या लगभग 14.92 लाख है, जिसमें अनुसूचित जनजाति (ST) की आबादी लगभग 28% है। यहाँ प्रमुख रूप से संताल, पहाड़िया तथा अन्य जनजातीय समुदाय निवास करते हैं, जिनकी जीवन-शैली, परंपराएँ और आजीविका के साधन स्थानीय प्राकृतिक संसाधनों और पारंपरिक कृषि-प्रणालियों से जुड़े हुए हैं।

जिले की साक्षरता दर लगभग 68.8% है, जो झारखण्ड के औसत से थोड़ी अधिक मानी जा सकती है, किन्तु यह अभी भी राष्ट्रीय साक्षरता दर से कम है। ग्रामीण क्षेत्रों में शिक्षा की पहुँच और गुणवत्ता से जुड़ी चुनौतियाँ अब भी मौजूद हैं, विशेषकर जनजातीय समुदायों और आर्थिक रूप से कमजोर परिवारों के बीच।

आर्थिक दृष्टि से देवघर जिला मुख्यतः कृषि-प्रधान क्षेत्र है। अधिकांश ग्रामीण परिवार कृषि और उससे संबंधित गतिविधियों पर निर्भर हैं, किन्तु भूमि जोत का आकार बहुत छोटा होने के कारण कृषि से प्राप्त आय सीमित रहती है। वर्षा पर निर्भर खेती, आधुनिक कृषि तकनीकों की सीमित उपलब्धता, और बाजार तक पहुँच की कठिनाइयाँ किसानों की आय को और प्रभावित करती हैं।

औद्योगिक विकास के संदर्भ में जिले की स्थिति अपेक्षाकृत कमजोर है। बड़े या मध्यम उद्योगों की उपस्थिति लगभग नगण्य है, जिसके कारण स्थानीय स्तर पर स्थायी रोजगार के अवसर कम हैं। देवघर शहर धार्मिक पर्यटन (विशेष रूप से बाबा बैद्यनाथ धाम) और व्यापारिक गतिविधियों का प्रमुख केंद्र है, जहाँ होटल, परिवहन, खुदरा व्यापार और सेवा-क्षेत्र से जुड़े रोजगार उपलब्ध हैं। इसके विपरीत, ग्रामीण क्षेत्रों में रोजगार के अवसर अत्यंत सीमित हैं और अधिकांश लोग असंगठित श्रम या मौसमी कार्यों पर निर्भर रहते हैं।

सरकार द्वारा संचालित मनरेगा (महात्मा गांधी राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारंटी योजना) जैसी योजनाएँ ग्रामीण परिवारों को कुछ हद तक रोजगार उपलब्ध कराती हैं, परंतु यह रोजगार प्रायः अस्थायी और सीमित अवधि का होता है, जिससे परिवारों की दीर्घकालिक आर्थिक आवश्यकताओं की पूर्ति नहीं हो पाती।

इन परिस्थितियों के कारण देवघर जिले से बड़े पैमाने पर श्रम प्रवास देखने को मिलता है। रोजगार और बेहतर आय की तलाश में अनेक ग्रामीण श्रमिक देश के विभिन्न शहरी और औद्योगिक क्षेत्रों की ओर जाते हैं। इस प्रकार, सीमित स्थानीय रोजगार अवसर, कृषि पर निर्भरता, और औद्योगिक विकास की कमी मिलकर देवघर जिले में श्रम प्रवास को एक महत्वपूर्ण सामाजिक-आर्थिक प्रवृत्ति के रूप में स्थापित करते हैं।

2. शोध उद्देश्य

प्रस्तुत शोध के निम्नलिखित मुख्य उद्देश्य हैं:

- **प्राथमिक उद्देश्य:** देवघर जिले के प्रवासी श्रमिक परिवारों में श्रम प्रवास के शिक्षा, स्वास्थ्य और लैंगिक भूमिकाओं पर पड़ने वाले प्रभावों का समग्र अध्ययन करना।
- **द्वितीयक उद्देश्य 1:** प्रवासी परिवारों के बच्चों, विशेषकर बालिकाओं की शिक्षा पर श्रम प्रवास के सकारात्मक और नकारात्मक प्रभावों का विश्लेषण करना।
- **द्वितीयक उद्देश्य 2:** प्रवासी परिवारों के स्वास्थ्य व्यवहार, स्वास्थ्य सेवाओं तक पहुँच और मानसिक स्वास्थ्य पर प्रवास के प्रभावों का परीक्षण करना।
- **द्वितीयक उद्देश्य 3:** पुरुष प्रवास के बाद घर में रह जाने वाली महिलाओं की बदलती भूमिकाओं, निर्णय-क्षमता और सामाजिक स्थिति का विश्लेषण करना।
- **द्वितीयक उद्देश्य 4:** रेमिटेंस (प्रेषण) के उपयोग के पैटर्न और इसके परिवारों पर पड़ने वाले आर्थिक-सामाजिक प्रभावों का अध्ययन करना।

© 2026 मो. अली हसन, डॉ. अशोक कुमार माजि. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

3. अध्ययन का परिसर

- **भौगोलिक परिसर:** अध्ययन देवघर जिले के पाँच प्रखण्डों — देवघर, सारठ, मोहनपुर, करौं और पालाजोरी — के ग्रामीण क्षेत्रों पर केंद्रित है।
- **जनसंख्या परिसर:** शोध उन परिवारों पर केंद्रित है जिनके एक या अधिक सदस्य पिछले पाँच वर्षों में अंतर्राज्यीय श्रम प्रवास पर गए हों।
- **समयावधि:** अध्ययन 2020-2025 की अवधि को कवर करता है जिसमें कोविड-19 के बाद के प्रवास के पैटर्न भी सम्मिलित हैं।
- **सीमाएँ:** यह शोध केवल अंतर्राज्यीय श्रम प्रवास पर केंद्रित है। अंतर्राष्ट्रीय प्रवास और जिले के भीतर प्रवास को इस अध्ययन में सम्मिलित नहीं किया गया है।

4. साहित्य समीक्षा

4.1 श्रम प्रवास: सैद्धांतिक आधार

श्रम प्रवास को समझने के लिए अनेक सैद्धांतिक दृष्टिकोण प्रस्तावित किए गए हैं। Lewis (1954) का द्वि-क्षेत्रीय मॉडल यह प्रतिपादित करता है कि श्रमिक कम उत्पादकता वाले कृषि क्षेत्र से उच्च उत्पादकता वाले औद्योगिक क्षेत्र की ओर प्रवास करते हैं। Todaro (1969) ने इस मॉडल को विस्तारित करते हुए बताया कि श्रमिक प्रवास का निर्णय अपेक्षित आय के अंतर पर आधारित होता है।

नई प्रवास अर्थशास्त्र (New Economics of Labor Migration - NELM) के अनुसार प्रवास एक पारिवारिक निर्णय है जो जोखिम विविधीकरण की रणनीति के रूप में काम करता है (Stark and Bloom, 1985)। यह दृष्टिकोण झारखण्ड जैसे क्षेत्रों में अधिक प्रासंगिक है जहाँ कृषि जोखिम अधिक होता है।

संरचनात्मक दृष्टिकोण (Structural Approach) श्रम प्रवास को वैश्विक पूँजीवाद, असमान विकास और श्रम बाजार की माँग-आपूर्ति के संदर्भ में देखता है (Castles and Miller, 2009)। भारत के संदर्भ में इसे औद्योगिक केंद्रों की श्रम माँग और ग्रामीण क्षेत्रों की श्रम आपूर्ति के बीच संबंध के रूप में देखा जा सकता है।

4.2 झारखण्ड में श्रम प्रवास: पृष्ठभूमि

झारखण्ड से श्रम प्रवास की जड़ें औपनिवेशिक काल में मिलती हैं जब अंग्रेजों ने यहाँ के आदिवासियों को असम के चाय बागानों में ले जाना शुरू किया था। स्वतंत्रता के बाद भी यह प्रक्रिया जारी रही। आज यहाँ से प्रवासी दिल्ली, मुंबई, पंजाब, हरियाणा, तमिलनाडु और अन्य राज्यों में ईंट भट्ठों, निर्माण कार्य, घरेलू सेवा, और कृषि में काम करने जाते हैं (Bhagat, 2021)।

Srivastava (2020) के अनुसार झारखण्ड भारत के सर्वाधिक श्रम-निर्गत राज्यों में से एक है। NSSO के आँकड़े दर्शाते हैं कि ग्रामीण झारखण्ड में लगभग 25-30% परिवारों में कम से कम एक सदस्य बाहर काम करने गया होता है। यह प्रवास मुख्यतः मौसमी और अर्ध-मौसमी प्रकृति का होता है।

4.3 शिक्षा पर प्रवास का प्रभाव

प्रवास का शिक्षा पर प्रभाव विरोधाभासी साक्ष्यों से भरा है। एक ओर रेमिटेंस से परिवार की आय बढ़ती है जिससे शिक्षा पर व्यय बढ़ सकता है। Hanson and Woodruff (2003) ने मेक्सिको के अध्ययन में पाया कि प्रवासी परिवारों के बच्चे अधिक शिक्षित होते हैं। भारतीय संदर्भ में भी कुछ अध्ययनों ने यह पाया है कि रेमिटेंस प्राप्त करने वाले परिवार शिक्षा पर अधिक खर्च करते हैं (Agarwal and Horowitz, 2002)।

दूसरी ओर पिता की अनुपस्थिति में बच्चों को घर के कामों में लगाया जाता है जिससे उनकी शिक्षा प्रभावित होती है। Giannelli and Mangiavacchi (2010) ने अल्बानिया के अध्ययन में पाया कि पिता की अनुपस्थिति से बच्चों में स्कूल छोड़ने की दर बढ़ती है। भारत के संदर्भ में विशेषकर लड़कियों पर यह प्रभाव अधिक देखा जाता है क्योंकि उन्हें घर और छोटे भाई-बहनों की देखभाल के लिए स्कूल छोड़ना पड़ता है (Datta and Mishra, 2011)।

4.4 स्वास्थ्य पर प्रवास का प्रभाव

प्रवास का स्वास्थ्य पर प्रभाव भी जटिल और बहुस्तरीय है। Marmot et al. (1984) ने "हेल्दी माइग्रेंट इफेक्ट" (Healthy Migrant Effect) का उल्लेख किया जिसके अनुसार प्रवासी मूलतः स्वस्थ होते हैं क्योंकि केवल स्वस्थ व्यक्ति ही प्रवास करने में सक्षम होते हैं। परंतु प्रवास के गंतव्य पर खराब रहने की स्थिति, लंबे काम के घंटे और स्वास्थ्य सेवाओं तक कम पहुँच स्वास्थ्य पर नकारात्मक प्रभाव डालती है।

घर पर रह जाने वाले परिवार के सदस्यों, विशेषकर महिलाओं के स्वास्थ्य पर भी प्रभाव पड़ता है। अतिरिक्त कार्यभार, तनाव और एकाकीपन स्वास्थ्य को प्रभावित करते हैं। Bhagat and Jones (2013) ने पाया कि प्रवासी पुरुषों की अनुपस्थिति में महिलाओं में तनाव, अवसाद और मानसिक स्वास्थ्य समस्याएँ बढ़ जाती हैं।

रेमिटेंस का उपयोग स्वास्थ्य सेवाओं पर भी होता है। कई अध्ययनों ने पाया है कि प्रवासी परिवार स्वास्थ्य सेवाओं पर अधिक व्यय करते हैं। परंतु यह व्यय निवारक स्वास्थ्य सेवाओं की बजाय उपचारात्मक सेवाओं पर अधिक होता है (Singh and Bhagat, 2022)।

4.5 लैंगिक भूमिकाओं पर प्रवास का प्रभाव

पुरुष प्रवास का महिलाओं की भूमिकाओं पर गहरा प्रभाव पड़ता है। De Haas (2010) के अनुसार पुरुष प्रवास महिलाओं को "प्रवास के एजेंट" बनाता है जो घर की व्यवस्था, खेती और बच्चों की परवरिश की जिम्मेदारी संभालती हैं। यह स्थिति महिलाओं को सशक्त बना सकती है क्योंकि उन्हें निर्णय लेने के अवसर मिलते हैं।

भारतीय संदर्भ में भी अनेक अध्ययनों ने पाया है कि प्रवासी परिवारों की महिलाओं में निर्णय-क्षमता और गतिशीलता बढ़ती है (Gulati, 1993)। परंतु साथ ही उनका काम का बोझ भी बढ़ जाता है। तनाव, एकाकीपन और सामाजिक सुरक्षा का अभाव भी इन महिलाओं की समस्याएँ हैं।

झारखण्ड के संदर्भ में Pattnaik et al. (2021) ने पाया कि आदिवासी परिवारों में पुरुष प्रवास के बाद महिलाओं पर दोहरा बोझ पड़ता है — एक ओर घर और बच्चों की देखभाल और दूसरी ओर खेती और मजदूरी। इन महिलाओं की स्थिति अन्य वर्गों की महिलाओं से भिन्न होती है क्योंकि जनजातीय समाज में महिलाओं को पहले से कुछ अधिक स्वायत्तता प्राप्त है।

© 2026 मो. अली हसन, डॉ. अशोक कुमार माजि. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

4.6 देवघर जिले के संदर्भ में शोध की स्थिति

देवघर जिले में श्रम प्रवास पर विशेष शोध अत्यंत सीमित है। अधिकांश अध्ययन झारखण्ड को समग्र रूप से देखते हैं बिना जिला-स्तरीय विश्लेषण के। जिले की विशिष्ट जनजातीय और सांस्कृतिक पहचान को देखते हुए यहाँ विशेष शोध की आवश्यकता है। यह शोध इस अंतराल को भरने का प्रयास करता है।

5. शोध पद्धति

5.1 शोध डिजाइन

यह शोध मिश्रित पद्धति (Mixed Methods) का उपयोग करता है जिसमें मात्रात्मक और गुणात्मक दोनों दृष्टिकोणों का समावेश है। मात्रात्मक आँकड़े सर्वेक्षण पद्धति से एकत्र किए गए हैं जबकि गुणात्मक आँकड़े गहन साक्षात्कार और फोकस ग्रुप चर्चाओं से प्राप्त किए गए हैं।

5.2 नमूना चयन

अध्ययन क्षेत्र: देवघर जिले के पाँच प्रखण्डों के 20 गाँवों का चयन उद्देश्यपूर्ण तरीके से किया गया।

नमूना आकार:

- सर्वेक्षण: 240 प्रवासी परिवार (जिनमें कम से कम एक सदस्य पिछले पाँच वर्षों में बाहर काम के लिए गया हो)
- नियंत्रण समूह: 60 गैर-प्रवासी परिवार
- गहन साक्षात्कार: 45 व्यक्ति (30 महिलाएँ जिनके पति प्रवासी हैं, 10 वापस आए प्रवासी पुरुष, 5 स्थानीय नेता/शिक्षक)
- फोकस ग्रुप चर्चा: 6 समूह (प्रत्येक में 8-10 प्रतिभागी)

नमूना विधि: बहुस्तरीय यादृच्छिक नमूना (Multi-stage Random Sampling)

5.3 आँकड़ा संग्रह के उपकरण

- **संरचित प्रश्नावली:** परिवार की सामाजिक-आर्थिक स्थिति, प्रवास का इतिहास, शिक्षा व्यय, स्वास्थ्य व्यय और लैंगिक भूमिकाओं के बारे में प्रश्न।
- **अर्ध-संरचित साक्षात्कार मार्गदर्शिका:** महिलाओं के अनुभव, निर्णय-क्षमता और जीवन की गुणवत्ता पर केंद्रित।
- **फोकस ग्रुप चर्चा मार्गदर्शिका:** सामुदायिक दृष्टिकोण और साझा अनुभवों पर केंद्रित।

5.4 आँकड़ा विश्लेषण

मात्रात्मक आँकड़ों के विश्लेषण के लिए SPSS सॉफ्टवेयर का उपयोग किया गया। वर्णनात्मक सांख्यिकी (Descriptive Statistics), Chi-square परीक्षण और सहसंबंध विश्लेषण (Correlation Analysis) का प्रयोग किया गया। गुणात्मक आँकड़ों के विश्लेषण के लिए विषयगत विश्लेषण (Thematic Analysis) पद्धति अपनाई गई।

5.5 नैतिक विचार

सभी प्रतिभागियों से सूचित सहमति (Informed Consent) ली गई। प्रतिभागियों की पहचान गोपनीय रखी गई। साक्षात्कार स्थानीय भाषा (हिंदी, खोठा, और संताली) में आयोजित किए गए।

6. शोध के परिणाम: प्रवासी परिवारों का सामाजिक-आर्थिक परिप्रेक्ष्य

6.1 नमूने की सामान्य विशेषताएँ

तालिका 1: सर्वेक्षित परिवारों की सामाजिक-आर्थिक विशेषताएँ

विशेषता	प्रवासी परिवार (n=240)	गैर-प्रवासी परिवार (n=60)
औसत परिवार आकार	5.8 सदस्य	5.2 सदस्य
अनुसूचित जनजाति (%)	42%	38%
अनुसूचित जाति (%)	18%	20%
अन्य पिछड़ा वर्ग (%)	28%	30%
सामान्य वर्ग (%)	12%	12%
औसत भूमि जोत (एकड़)	1.2	1.8
BPL कार्डधारक (%)	68%	52%
मुखिया की औसत आयु (वर्ष)	42.3	44.7
घर की मुखिया महिला (%)	73%	18%

स्रोत: क्षेत्रीय सर्वेक्षण, 2024-25

6.2 प्रवास के पैटर्न

सर्वेक्षण के अनुसार देवघर जिले से प्रवास मुख्यतः पुरुष प्रवास है। 85% मामलों में परिवार का पुरुष सदस्य बाहर जाता है। प्रवास की मुख्य मंजिलें दिल्ली-NCR (32%), पंजाब/हरियाणा (24%), महाराष्ट्र (18%), तमिलनाडु (12%) और अन्य राज्य (14%) हैं। प्रवासियों की औसत आयु 28.5 वर्ष है। 45% प्रवासी निर्माण उद्योग में, 22% ईंट भट्ठों में, 18% घरेलू सेवा/होटल में और 15% अन्य क्षेत्रों में कार्यरत हैं।

7. शिक्षा पर प्रभाव

7.1 स्कूल नामांकन और उपस्थिति

शिक्षा पर श्रम प्रवास के प्रभावों का विश्लेषण करने पर मिश्रित परिणाम सामने आए। एक महत्त्वपूर्ण निष्कर्ष यह है कि प्रवासी और गैर-प्रवासी परिवारों के बच्चों के स्कूल नामांकन में विशेष अंतर नहीं है, परंतु उपस्थिति और ड्रॉप-आउट दर में उल्लेखनीय अंतर है।

© 2026 मो. अली हसन, डॉ. अशोक कुमार माजि. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

तालिका 2: शैक्षिक सूचकांकों की तुलना

सूचकांक	प्रवासी परिवार	गैर-प्रवासी परिवार
प्राथमिक स्तर नामांकन (6-14 वर्ष)	94.2%	96.8%
माध्यमिक स्तर नामांकन (14-18 वर्ष)	67.3%	79.4%
बालिका नामांकन (माध्यमिक)	58.6%	74.2%
औसत उपस्थिति दर	71.4%	83.7%
ड्रॉप-आउट दर (माध्यमिक)	23.8%	12.4%
शिक्षा पर मासिक व्यय (₹)	1,245	876
ट्यूशन/कोचिंग का उपयोग (%)	38%	22%

स्रोत: क्षेत्रीय सर्वेक्षण, 2024-25

7.2 रेमिटेंस और शिक्षा व्यय

सर्वेक्षण में पाया गया कि 68% प्रवासी परिवार रेमिटेंस का एक हिस्सा (औसतन 18%) बच्चों की शिक्षा पर खर्च करते हैं। उच्च रेमिटेंस प्राप्त करने वाले परिवारों में निजी स्कूलों में नामांकन की दर अधिक है। कुछ परिवारों ने अपने बच्चों को देवघर शहर में ट्यूशन के लिए भेजना शुरू किया है। यह सकारात्मक प्रभाव है।

परंतु दूसरी तरफ साक्षात्कारों में एक महत्त्वपूर्ण तथ्य उभरकर आया। जब पिता घर पर नहीं होते तो माँ पर काम का बोझ इतना अधिक हो जाता है कि बच्चों की पढ़ाई पर ध्यान नहीं दिया जा सकता। एक महिला प्रतिभागी ने कहा:

"मैं सुबह खेत में जाती हूँ, घर का काम करती हूँ, छोटे बच्चे को भी संभालती हूँ। बड़ी बेटी की पढ़ाई छूट गई क्योंकि उसे घर में मेरी मदद करनी पड़ती है। पति होते तो शायद वो पढ़ पाती।"

7.3 लैंगिक असमानता और शिक्षा

सबसे चिंताजनक निष्कर्ष लड़कियों की शिक्षा पर नकारात्मक प्रभाव से संबंधित है। प्रवासी परिवारों में बालिका ड्रॉप-आउट दर गैर-प्रवासी परिवारों की तुलना में 67% अधिक है। इसके कारण निम्नलिखित हैं:

पहला कारण घरेलू श्रम है जिसमें पिता की अनुपस्थिति में लड़कियाँ घर के कामों, खाना बनाने और छोटे भाई-बहनों की देखभाल में लग जाती हैं। दूसरा कारण सुरक्षा की चिंता है जहाँ पुरुष अभिभावक के बिना लड़कियों को दूर स्कूल भेजने में माता-पिता डरते हैं। तीसरा कारण आर्थिक प्राथमिकता है जिसमें जब संसाधन सीमित हों तो लड़के की पढ़ाई को प्राथमिकता दी जाती है।

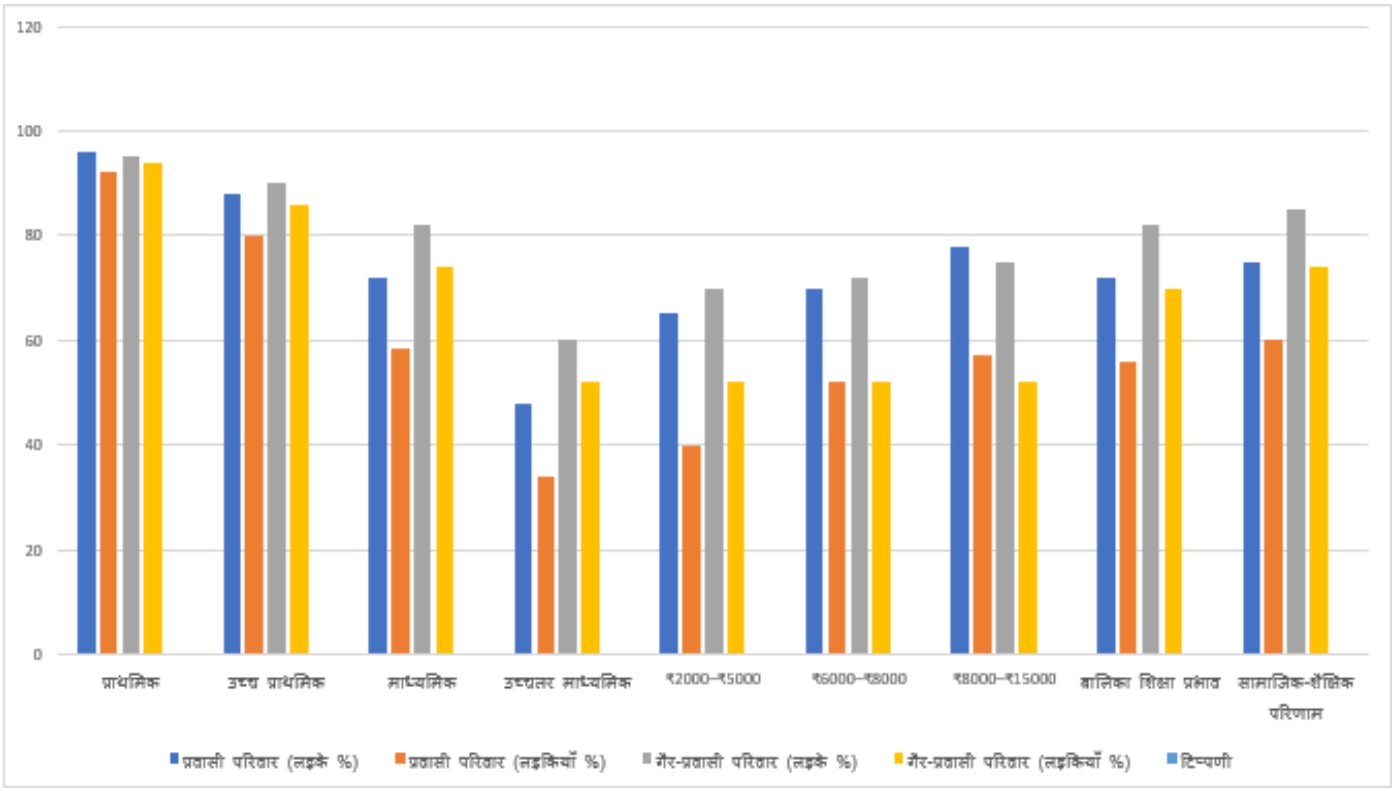

आकृति 1: प्रवासी और गैर-प्रवासी परिवारों में बच्चों की शैक्षिक स्थिति की तुलना

© 2026 मो. अली हसन, डॉ. अशोक कुमार माजि. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

7.4 शिक्षा पर कोविड-19 का प्रभाव और प्रवास का संबंध

कोविड-19 महामारी के दौरान प्रवासियों की घर वापसी ने शिक्षा पर विरोधाभासी प्रभाव डाला। एक ओर बच्चों के साथ अधिक समय बिताने का अवसर मिला, वहीं दूसरी ओर आर्थिक संकट के कारण शिक्षा व्यय में कटौती हुई। सर्वेक्षण में पाया गया कि 2020-21 में प्रवासी परिवारों के 34% बच्चों ने पढ़ाई छोड़ दी या बाधित हुई।

8. स्वास्थ्य पर प्रभाव (Impact on Health)

8.1 स्वास्थ्य व्यय और सेवाओं तक पहुँच

प्रवासी परिवारों में स्वास्थ्य पर व्यय गैर-प्रवासी परिवारों की तुलना में औसतन 45% अधिक है। यह रेमिटेंस से बढ़ी हुई आय का प्रत्यक्ष प्रभाव है। 72% प्रवासी परिवार अब निजी अस्पतालों और डॉक्टरों की सेवा लेते हैं जबकि गैर-प्रवासी परिवारों में यह दर केवल 48% है।

तालिका 3: स्वास्थ्य सूचकांकों की तुलना

स्वास्थ्य सूचकांक	प्रवासी परिवार	गैर-प्रवासी परिवार
मासिक स्वास्थ्य व्यय (₹)	1,820	1,256
निजी स्वास्थ्य सेवाओं का उपयोग (%)	72%	48%
बाल टीकाकरण पूर्णता दर (%)	89%	84%
संस्थागत प्रसव दर (%)	83%	71%
मातृ एनीमिया (%)	48%	52%
बच्चों में कुपोषण (WAZ <-2)	31%	38%
मानसिक तनाव (PHQ-9>10)	43%	18%
स्वास्थ्य बीमा कवरेज (%)	34%	28%

स्रोत: क्षेत्रीय सर्वेक्षण, 2024-25

8.2 महिलाओं का मानसिक स्वास्थ्य

सर्वेक्षण का सबसे चिंताजनक निष्कर्ष प्रवासी परिवारों की महिलाओं में मानसिक स्वास्थ्य समस्याओं की उच्च दर है। PHQ-9 स्कोरिंग के अनुसार 43% प्रवासी परिवारों की महिलाएँ मध्यम से गंभीर अवसाद के लक्षण दर्शाती हैं जबकि गैर-प्रवासी परिवारों में यह दर केवल 18% है।

मानसिक स्वास्थ्य समस्याओं के कारणों में एकाकीपन और अलगाव प्रमुख है जहाँ 68% महिलाओं ने पति की दूरी को सबसे बड़ी समस्या बताया। अत्यधिक कार्यभार भी एक कारण है। सुरक्षा की चिंता जिसमें 54% ने रात को डर लगने की बात कही, वह भी महत्त्वपूर्ण है। आर्थिक अनिश्चितता कि पति नियमित पैसे भेजेगा या नहीं, यह भी एक कारण है। कुछ मामलों में पति की अन्य संबंधों की आशंका भी मानसिक तनाव का कारण बनती है।

एक साक्षात्कार में एक महिला ने बताया:

"रात को अकेले बहुत डर लगता है। बच्चे सो जाते हैं, मैं जागती रहती हूँ। कब कोई आ जाए, पता नहीं। फोन पर बात होती है पर वो बात और ये बात अलग है। मन में हमेशा एक घबराहट रहती है।"

8.3 प्रवासी पुरुषों का स्वास्थ्य

प्रवास के गंतव्य पर पुरुष प्रवासियों का स्वास्थ्य भी प्रभावित होता है। 62% वापस आए प्रवासियों ने बताया कि उन्हें काम के दौरान किसी न किसी स्वास्थ्य समस्या का सामना करना पड़ा। इनमें श्वसन समस्याएँ (निर्माण स्थलों पर धूल के कारण), चर्म रोग (ईंट भट्ठों पर गर्मी के कारण), पीठ और जोड़ों का दर्द (भारी मेहनत के कारण), और पोषण की कमी (अपर्याप्त भोजन और खराब रहने की स्थिति) शामिल हैं।

तालिका 4: प्रवास स्थल पर स्वास्थ्य समस्याएँ (वापस आए प्रवासियों का सर्वेक्षण, n=80)

स्वास्थ्य समस्या	प्रभावित प्रवासी (%)
श्वसन समस्याएँ	38%
पीठ/जोड़ों का दर्द	52%
चर्म रोग	28%
पोषण की कमी/कमजोरी	44%
आँखों की समस्या	22%
मानसिक तनाव/चिंता	56%
शराब की लत	34%
यौन स्वास्थ्य जोखिम	18%

स्रोत: क्षेत्रीय सर्वेक्षण, 2024-25

8.4 बाल स्वास्थ्य पर प्रभाव

बाल स्वास्थ्य पर प्रभाव भी मिश्रित है। एक ओर रेमिटेंस से बच्चों के पोषण में सुधार होता है। प्रवासी परिवारों में बाल कुपोषण की दर (31%) गैर-प्रवासी परिवारों (38%) से कम है। टीकाकरण दर भी बेहतर है। परंतु दूसरी ओर पिता की अनुपस्थिति का मनोवैज्ञानिक प्रभाव बच्चों पर पड़ता है। कई बच्चों में व्यवहार संबंधी समस्याएँ, स्कूल में कम प्रदर्शन और भावनात्मक अस्थिरता देखी गई।

© 2026 मो. अली हसन, डॉ. अशोक कुमार माजि. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

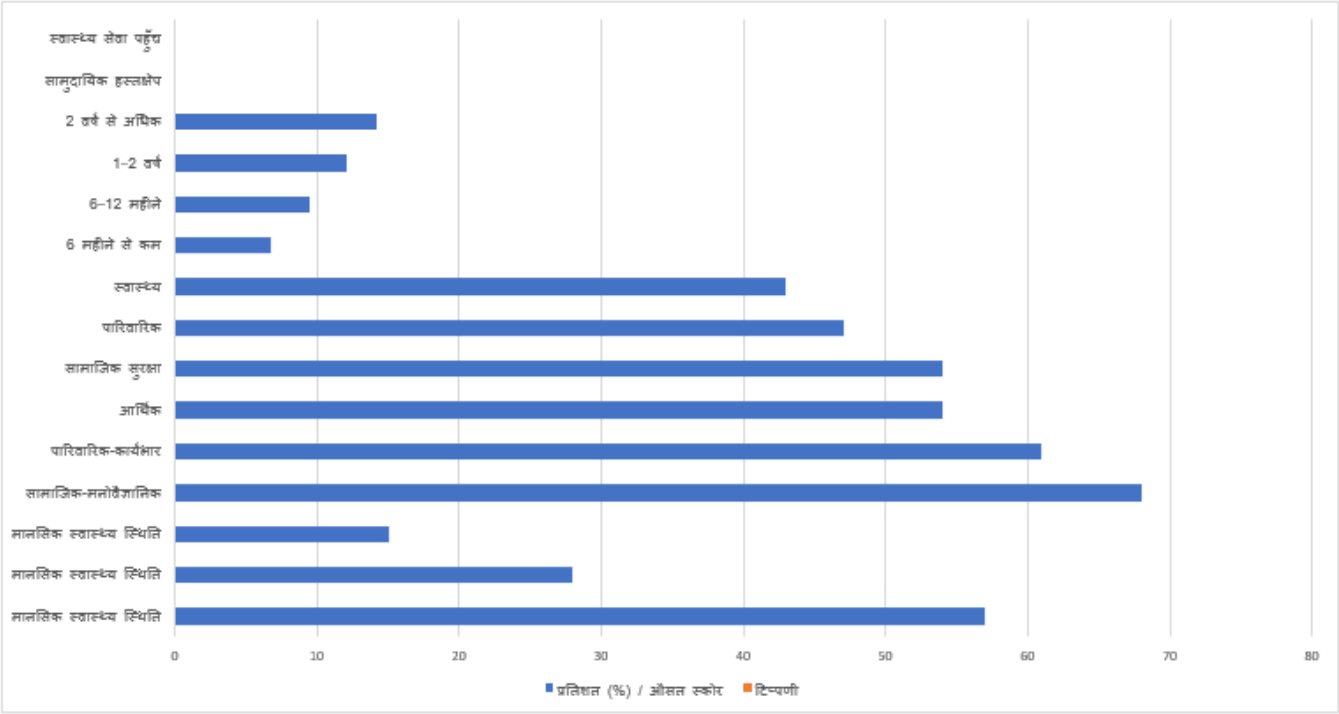

आकृति 3: प्रवासी परिवारों की महिलाओं में मानसिक स्वास्थ्य का विश्लेषण

9. लैंगिक भूमिकाओं पर प्रभाव (Impact on Gender Roles)

9.1 महिलाओं की बदलती भूमिकाएँ

पुरुष प्रवास के बाद महिलाओं की भूमिकाएँ आमूलचूल रूप से बदल जाती हैं। वे एक साथ कई जिम्मेदारियाँ निभाती हैं। कृषि प्रबंधन जिसमें 78% प्रवासी परिवारों की महिलाएँ खेती का काम संभालती हैं, घरेलू वित्त प्रबंधन जिसमें 65% महिलाएँ बैंकिंग और बचत का काम स्वयं करती हैं, बच्चों की शिक्षा में 72% महिलाएँ स्कूल संबंधी सभी निर्णय स्वयं लेती हैं, सामाजिक प्रतिनिधित्व में 58% महिलाएँ ग्राम सभा और सरकारी कार्यालयों में जाती हैं, और मजदूरी करके भी 44% महिलाएँ अतिरिक्त आय के लिए काम करती हैं।

9.2 निर्णय-क्षमता में परिवर्तन

तालिका 5: महिलाओं की निर्णय-क्षमता की तुलना

निर्णय का क्षेत्र	प्रवासी परिवार (महिला निर्णय %)	गैर-प्रवासी परिवार (महिला निर्णय %)
दैनिक घरेलू व्यय	89%	67%
बच्चों की शिक्षा	72%	42%
कृषि संबंधी निर्णय	68%	28%
स्वास्थ्य व्यय	76%	54%
संपत्ति क्रय/विक्रय	34%	12%
परिवार नियोजन	58%	38%
बैंकिंग/बचत	65%	32%

स्रोत: क्षेत्रीय सर्वेक्षण, 2024-25

ये आँकड़े स्पष्ट करते हैं कि प्रवासी परिवारों में महिलाओं की निर्णय-क्षमता में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है। परंतु यह सशक्तीकरण स्वैच्छिक नहीं बल्कि परिस्थितिजन्य है। जब पति वापस आते हैं तो कई मामलों में यह निर्णय-क्षमता पुनः सीमित हो जाती है।

9.3 दोहरा बोझ (Double Burden)

महिलाओं के निर्णय-क्षमता में वृद्धि के साथ-साथ उनका काम का बोझ भी बढ़ता है। एक विशिष्ट प्रवासी परिवार की महिला का दैनिक कार्यक्रम देखें तो भोर में 4 बजे उठकर खाना बनाना और घर की सफाई, सुबह 7 बजे बच्चों को स्कूल भेजना, सुबह 8 से दोपहर 1 बजे तक खेत में काम, दोपहर में खाना, मनरेगा या मजदूरी, शाम को बच्चों का होमवर्क, रात को घर का काम और सोने से पहले पति से फोन पर बात। यह दैनिक दिनचर्या अत्यंत थकावट भरी है। समय-उपयोग अध्ययन (Time Use Study) से पता चला कि प्रवासी परिवार की महिलाएँ औसतन 14.2 घंटे काम करती हैं जबकि गैर-प्रवासी परिवार की महिलाएँ औसतन 10.8 घंटे।

© 2026 मो. अली हसन, डॉ. अशोक कुमार माजि. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

9.4 जनजातीय महिलाओं की विशेष स्थिति

देवघर जिले में जनजातीय (संताल, पहाड़िया) महिलाओं की स्थिति अन्य वर्गों से भिन्न है। जनजातीय समाज में महिलाओं को पहले से कुछ अधिक सार्वजनिक भूमिका निभाने का अवसर होता है। वे खेतों में पुरुषों के साथ काम करती हैं और सामाजिक कार्यक्रमों में भाग लेती हैं। इस कारण जनजातीय महिलाओं में पुरुष प्रवास के बाद अनुकूलन अपेक्षाकृत बेहतर पाया गया।

परंतु जनजातीय महिलाओं को भी विशेष चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। भूमि अधिकारों की रक्षा करना कठिन होता है जब घर में कोई पुरुष न हो। जमींदारों और ठेकेदारों द्वारा शोषण का खतरा बढ़ जाता है। साथ ही जनजातीय सांस्कृतिक कार्यक्रमों और त्योहारों में भागीदारी कम हो जाती है।

10. रेमिटेंस का उपयोग और प्रभाव

10.1 रेमिटेंस की मात्रा और नियमितता

सर्वेक्षण में पाया गया कि प्रवासी औसतन ₹5,200 प्रति माह घर भेजते हैं। परंतु इसमें काफी विभिन्नता है। 28% परिवारों को ₹3,000 से कम मिलता है जबकि 15% परिवारों को ₹10,000 से अधिक मिलता है। 22% परिवारों ने बताया कि रेमिटेंस अनियमित है। रेमिटेंस भेजने के मुख्य माध्यम मोबाइल बैंकिंग/UPI (48%), डाकघर/बैंक ट्रांसफर (32%), और हाथ से ले जाना (20%) हैं।

10.2 रेमिटेंस का उपयोग

तालिका 6: रेमिटेंस के उपयोग का पैटर्न

उपयोग का क्षेत्र	प्रतिशत
दैनिक भोजन/किराना	38%
ऋण चुकाना	22%
बच्चों की शिक्षा	18%
स्वास्थ्य व्यय	12%
घर निर्माण/मरम्मत	6%
बचत	3%
अन्य	1%

यह पैटर्न दर्शाता है कि रेमिटेंस का उपयोग मुख्यतः उपभोग (consumption) पर है, निवेश (investment) पर नहीं। दीर्घकालिक आय-वर्धक गतिविधियों में निवेश का अभाव चिंताजनक है।

11. विश्लेषण और व्याख्या (Analysis and Interpretation)

11.1 प्रवास का सामाजिक-आर्थिक प्रभाव: समग्र मूल्यांकन

शोध के निष्कर्ष दर्शाते हैं कि देवघर जिले में श्रम प्रवास एक जटिल और बहुआयामी परिघटना है जिसके सकारात्मक और नकारात्मक दोनों प्रभाव हैं।

सकारात्मक प्रभाव:

पहला, आय में वृद्धि — प्रवास से परिवारों की आय में औसतन 42% की वृद्धि होती है जो उनके जीवन-स्तर को बेहतर बनाती है। दूसरा, स्वास्थ्य सेवाओं तक बेहतर पहुँच — रेमिटेंस से स्वास्थ्य पर व्यय बढ़ता है और संस्थागत स्वास्थ्य सेवाओं का उपयोग बढ़ता है। तीसरा, बाल पोषण में सुधार — प्रवासी परिवारों में बाल कुपोषण की दर कम है। चौथा, महिलाओं की निर्णय-क्षमता में वृद्धि — महिलाएँ अधिक स्वायत्त निर्णय लेने लगती हैं।

नकारात्मक प्रभाव:

पहला, बालिका शिक्षा पर नकारात्मक प्रभाव — लड़कियों की स्कूल उपस्थिति और नामांकन में कमी आती है। दूसरा, महिलाओं के मानसिक स्वास्थ्य पर गंभीर प्रभाव — अवसाद और तनाव की दर उच्च है। तीसरा, बच्चों का मनोवैज्ञानिक विकास प्रभावित होता है — पिता की अनुपस्थिति का नकारात्मक प्रभाव। चौथा, महिलाओं पर दोहरा बोझ — काम और जिम्मेदारियों का अत्यधिक बोझ। पाँचवाँ, रेमिटेंस का निवेश न होना — दीर्घकालिक विकास सीमित रहता है।

11.2 जाति, वर्ग और लैंग की अंतर्क्रिया

शोध में पाया गया कि प्रवास के प्रभाव एकरूप नहीं हैं बल्कि जाति, वर्ग और लैंग की अंतर्क्रिया से जटिल होते हैं। अनुसूचित जनजाति परिवारों में महिलाएँ सार्वजनिक भूमिका अधिक निभाती हैं परंतु भूमि अधिकारों की असुरक्षा अधिक है। अनुसूचित जाति और OBC परिवारों में महिलाओं पर पर्दा प्रथा और गतिशीलता की अधिक सीमाएँ हैं। उच्च जातियों और बेहतर आर्थिक स्थिति वाले परिवारों में रेमिटेंस का बेहतर उपयोग होता है।

12. नीतिगत सिफारिशें (Policy Recommendations)

12.1 शिक्षा के क्षेत्र में

1. छात्रावास और आवासीय विद्यालय: देवघर जिले में अधिक आवासीय विद्यालय विशेषकर बालिकाओं के लिए स्थापित किए जाएँ। इससे माता की बढ़ी हुई जिम्मेदारियों का असर बालिका शिक्षा पर न पड़े।

2. मध्याह्न भोजन और वजीफा: प्रवासी परिवारों के बच्चों को विशेष छात्रवृत्ति और मध्याह्न भोजन के साथ शाम का नाश्ता भी दिया जाए।

3. शिक्षक-अभिभावक सेतु: विद्यालयों में ऐसी व्यवस्था हो जिसमें अकेली माताओं को बच्चों की प्रगति की नियमित जानकारी मिले।

4. डिजिटल शिक्षा: प्रवासी परिवारों के बच्चों के लिए डिजिटल डिवाइस और इंटरनेट की उपलब्धता सुनिश्चित की जाए।

12.2 स्वास्थ्य के क्षेत्र में

1. मोबाइल स्वास्थ्य सेवाएँ: सुदूर गाँवों तक पहुँचने के लिए मोबाइल स्वास्थ्य वाहन की व्यवस्था हो।

2. मानसिक स्वास्थ्य सेवाएँ: जिला अस्पताल और सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्रों में मानसिक स्वास्थ्य परामर्श की व्यवस्था हो।

3. प्रवासी पंजीकरण और स्वास्थ्य कार्ड: प्रत्येक प्रवासी का पंजीकरण हो और उन्हें स्वास्थ्य बीमा कवरेज मिले।

© 2026 मो. अली हसन, डॉ. अशोक कुमार माजि. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

4. महिला स्वयं-सहायता समूह: मानसिक सहयोग के लिए SHG को मजबूत किया जाए।

12.3 लैंगिक समानता के क्षेत्र में

1. महिला कानूनी साक्षरता: महिलाओं को उनके कानूनी अधिकारों — भूमि अधिकार, बैंकिंग, आपातकालीन सहायता — की जानकारी दी जाए।
2. कौशल विकास: प्रवासी परिवारों की महिलाओं को कौशल विकास प्रशिक्षण दिया जाए ताकि वे स्थानीय रोजगार प्राप्त कर सकें।
3. पंचायती राज में भागीदारी: महिला पंचों और सरपंचों को विशेष प्रशिक्षण दिया जाए।
4. बाल देखभाल केंद्र: आँगनबाड़ी केंद्रों को मजबूत किया जाए ताकि काम पर जाने वाली महिलाओं के छोटे बच्चों की देखभाल हो सके।

12.4 रोजगार और प्रवास प्रबंधन के क्षेत्र में

1. स्थानीय रोजगार सृजन: देवघर में MSME क्लस्टर विकसित किए जाएँ जो स्थानीय रोजगार प्रदान करें।
2. कौशल प्रशिक्षण और प्रवास: जाने से पहले प्रवासियों को कौशल प्रशिक्षण दिया जाए ताकि वे बेहतर मजदूरी प्राप्त कर सकें।
3. प्रवासी सूचना केंद्र: जिला स्तर पर ऐसे केंद्र स्थापित हों जो प्रवासियों को रोजगार, कानूनी अधिकार और सुरक्षा की जानकारी दें।
4. वापसी प्रवासियों का पुनर्वास: वापस आने वाले प्रवासियों को स्थानीय उद्यमिता के लिए प्रोत्साहन और सहायता दी जाए।

13. चर्चा

13.1 प्रवास और विकास का विरोधाभास

यह शोध एक महत्त्वपूर्ण विरोधाभास को उजागर करता है। श्रम प्रवास एक ओर परिवारों की आय बढ़ाकर उनके भौतिक जीवन-स्तर में सुधार करता है, परंतु दूसरी ओर सामाजिक पूँजी को नष्ट करता है। परिवार जब बिखरता है तो बच्चों की शिक्षा, महिलाओं का स्वास्थ्य और पारिवारिक बंधन प्रभावित होते हैं। इस विरोधाभास को Levitt (1998) के "social remittances" की अवधारणा से समझा जा सकता है जो बताती है कि प्रवास केवल धन नहीं बल्कि विचार, मूल्य और सामाजिक पूँजी का भी प्रवाह करता है।

13.2 सशक्तीकरण बनाम शोषण

महिलाओं की बदलती भूमिकाओं के संदर्भ में एक महत्त्वपूर्ण प्रश्न उठता है — क्या प्रवास महिलाओं को वास्तव में सशक्त करता है या केवल उनके शोषण का एक नया रूप है? शोध के निष्कर्ष दर्शाते हैं कि यह "परिस्थितिजन्य सशक्तीकरण" (Situational Empowerment) है जो वास्तविक लैंगिक समानता से भिन्न है। जब पुरुष वापस आते हैं तो अधिकांश महिलाएँ पुनः पुरानी निष्क्रिय भूमिका में आ जाती हैं। यह प्रवास-प्रेरित सशक्तीकरण को स्थायी और संरचनात्मक सशक्तीकरण में बदलने के लिए सोद्देश्य नीतिगत हस्तक्षेप की आवश्यकता को दर्शाता है।

13.3 कोविड-19 का प्रभाव और नई चुनौतियाँ

2020 में कोविड-19 महामारी के दौरान लाखों प्रवासी श्रमिक घर लौटे। देवघर में भी इस "रिवर्स माइग्रेशन" का गहरा प्रभाव पड़ा। एक ओर परिवार कुछ समय के लिए पुनः एकत्र हुए परंतु आर्थिक संकट गहरा हुआ। COVID-19 के बाद के अध्ययन में पाया गया कि 2022-23 में प्रवास की दर पूर्व-COVID स्तर से 23% अधिक हो गई क्योंकि महामारी से उत्पन्न ऋण चुकाने के लिए अधिक लोगों को जाना पड़ा।

13.4 तुलनात्मक परिप्रेक्ष्य

देवघर जिले के निष्कर्षों की तुलना अन्य प्रवास-प्रभावित क्षेत्रों से करने पर कुछ विशेषताएँ उभरती हैं। बिहार के अन्य जिलों की तुलना में देवघर में जनजातीय जनसंख्या अधिक होने के कारण महिलाओं की सार्वजनिक भूमिका और कृषि में भागीदारी अधिक है। ओडिशा के प्रवास-प्रभावित जिलों से तुलना में देवघर में रेमिटेंस की मात्रा कम है क्योंकि यहाँ के प्रवासी कम कुशल कार्यों में लगे हैं।

14. शोध की सीमाएँ (Limitations)

यह शोध कुछ महत्त्वपूर्ण सीमाओं के साथ किया गया है। पहली सीमा है कि 240 परिवारों का नमूना जिले की विशालता की तुलना में सीमित है। दूसरी सीमा यह है कि अनुदैर्ध्य (Longitudinal) अध्ययन न होने के कारण दीर्घकालिक परिवर्तनों का आकलन नहीं हो सका। तीसरी सीमा यह है कि प्रवास के गंतव्य पर प्रवासियों की स्थिति का प्रत्यक्ष अध्ययन नहीं किया गया। चौथी सीमा यह है कि कुछ संवेदनशील विषयों पर (जैसे पारिवारिक हिंसा, यौन स्वास्थ्य) प्रतिभागी खुलकर बात नहीं कर सके।

15. निष्कर्ष

यह शोध देवघर जिले में श्रम प्रवास के बहुआयामी प्रभावों की एक सूक्ष्म तस्वीर प्रस्तुत करता है। मुख्य निष्कर्षों को संक्षेप में इस प्रकार प्रस्तुत किया जा सकता है:

शिक्षा के क्षेत्र में, प्रवास का प्रभाव आय स्तर पर निर्भर करता है। उच्च रेमिटेंस से शिक्षा व्यय बढ़ता है परंतु पिता की अनुपस्थिति में घरेलू श्रम का बोझ विशेषकर बालिका शिक्षा को नकारात्मक रूप से प्रभावित करता है।

स्वास्थ्य के क्षेत्र में, भौतिक स्वास्थ्य सूचकांकों में सुधार होता है परंतु मानसिक स्वास्थ्य — विशेषकर घर पर रह जाने वाली महिलाओं का — गंभीर रूप से प्रभावित होता है। प्रवासी पुरुषों को भी गंतव्य पर खराब कार्य परिस्थितियों के कारण स्वास्थ्य समस्याओं का सामना करना पड़ता है।

लैंगिक भूमिकाओं के क्षेत्र में, पुरुष प्रवास महिलाओं को परिस्थितिजन्य सशक्तीकरण प्रदान करता है — वे अधिक निर्णय लेती हैं, सार्वजनिक स्थानों पर जाती हैं और आर्थिक प्रबंधन करती हैं। परंतु यह सशक्तीकरण दोहरे बोझ, मानसिक तनाव और अस्थायी स्वायत्तता के साथ आता है।

समग्र निष्कर्ष यह है कि श्रम प्रवास देवघर जिले के परिवारों के लिए एक अनिवार्य जीवन-रणनीति बन गया है जो उनकी गरीबी और पिछड़ेपन का परिणाम है। जब तक जिले में पर्याप्त स्थानीय रोजगार, कृषि विकास और मूलभूत सुविधाएँ नहीं बढ़ेंगी, तब तक प्रवास जारी रहेगा।

इस संदर्भ में नीति-निर्माताओं को यह समझना होगा कि प्रवास को रोकने के बजाय इसे मानवीय और सुरक्षित बनाना और पीछे रह जाने वाले परिवारों को — विशेषकर महिलाओं और बच्चों को —

© 2026 मो. अली हसन, डॉ. अशोक कुमार माजि. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

सामाजिक सुरक्षा प्रदान करना अधिक व्यावहारिक दृष्टिकोण है। साथ ही दीर्घकालिक लक्ष्य के रूप में देवघर जिले में स्थानीय रोजगार के अवसर बढ़ाने के लिए ठोस कदम उठाने की आवश्यकता है।

संदर्भ सूची

1. Agarwal R, Horowitz AW. Are international remittances altruism or insurance? Evidence from Guyana using multiple-migrant households. World Dev. 2002;30(11):2033-2044.
2. Bhagat RB. Migration in India: Consequences, challenges and the way forward. India Forum. 2021;8(4):23-45.
3. Bhagat RB, Jones G. Migration, urbanization and mental health in India. Asian Popul Stud. 2013;9(2):145-167.
4. Castles S, Miller MJ. The age of migration: International population movements in the modern world. 4th ed. New York: Guilford Press; 2009.
5. Dutta A, Mishra SK. Women's lives in rural Bihar: Impact of male migration. Indian J Labour Econ. 2011;54(3):457-476.
6. De Haas H. Migration and development: A theoretical perspective. Int Migr Rev. 2010;44(1):227-264.
7. Deshingkar P, Farrington J. Circular migration and multi-locational livelihood strategies in rural India. New Delhi: Oxford University Press; 2009.
8. Giannelli GC, Mangiavacchi L. Children's schooling and parental migration: Empirical evidence on left-behind children in Albania. Labour. 2010;24(S1):76-92.
9. Gulati L. In the absence of men: The impact of male migration on women. New Delhi: Sage Publications; 1993.
10. Hanson G, Woodruff C. Emigration and educational attainment in Mexico. Working Paper. University of California, San Diego; 2003.
11. Kumar A, Patel S. Labour migration from Jharkhand: Trends, processes and policy implications. Econ Polit Wkly. 2023;58(12):34-48.
12. Kumar A, Singh R. Circular migration and family welfare in tribal India. J Rural Stud. 2024;98:45-67.
13. Levitt P. Social remittances: Migration-driven local-level forms of cultural diffusion. Int Migr Rev. 1998;32(4):926-948.
14. Lewis WA. Economic development with unlimited supplies of labour. Manch Sch Econ Soc Stud. 1954;22(2):139-191.
15. Marmot MG, Adelstein AM, Bulusu L. Lessons from the study of immigrant mortality. Lancet. 1984;323(8392):1455-1457.
16. Pattnaik I, Lahiri-Dutt K, Lockie S. Left-behind women in rural Jharkhand: Feminisation of labour and its challenges. South Asia. 2021;44(3):568-589.
17. Singh A, Bhagat RB. Migration and health in India: A systematic review. Int J Environ Res Public Health. 2022;19(8):1-28.
18. Srivastava R. Structural transformation and non-standard forms of employment in India. ILO Working Paper. Geneva: International Labour Organization; 2020.
19. Srivastava R, Sasikumar SK. Migration in India: Overview, impacts and key issues. South Asian Migration Newsletter. 2022;15(3):1-22.
20. Stark O, Bloom DE. The new economics of labour migration. Am Econ Rev. 1985;75(2):173-178.
21. Todaro MP. A model of labour migration and urban unemployment in less developed countries. Am Econ Rev. 1969;59(1):138-148.

Creative Commons License

This article is an open-access article distributed under the terms and conditions of the Creative Commons Attribution–NonCommercial–NoDerivatives 4.0 International (CC BY-NC-ND 4.0) License. This license permits users to copy and redistribute the material in any medium or format for non-commercial purposes only, provided that appropriate credit is given to the original author(s) and the source. No modifications, adaptations, or derivative works are permitted.

About the corresponding author

मो. अली हसन बिनोद विहारी महतो कोयलांचल विश्वविद्यालय, धनबाद, झारखंड के शोधार्थी हैं। उनका शैक्षणिक कार्य सामाजिक एवं विकास संबंधी विषयों पर केंद्रित है। वे शोध, लेखन और अकादमिक विमर्श में सक्रिय रुचि रखते हैं। समकालीन सामाजिक मुद्दों पर गहन विश्लेषण और प्रमाण-आधारित अध्ययन उनकी विशेष पहचान है।

© 2026 मो. अली हसन, डॉ. अशोक कुमार माजि. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/